

## एक भण्डारी की आदतें

सब्त अपराह्न

मार्च 17

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: इफि० 5:15-17, कुलु० 3:23, लूका 12:35-48, याकूब 4:14, प्रेरित० 3:21, 1कुरि० 9:24-27 ।

**याद वचन:** “जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से। मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हूँ; मुझे तेरी आज्ञाओं की वाट से भटकने न दे! मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ” (भजन० 119:9-11)।

आपकी आदतें आपके जीवन में उद्देश्य और दिशा को दर्शाती हैं। भण्डारी जो अच्छी आदतों को विकसित करते हैं बहुत विश्वस्त भण्डारी होते हैं। दानिएल की प्रतिदिन प्रार्थना करने की आदत थी (दानि० 6:10), पौलुस की रीति थी सिनागोग में होना (प्रेरित० 17:1-2), वह लिखता है: “धोखा न खाओ: बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है” (1कुरि० 15:33), बुरी आदतों के स्थान पर हमें अच्छी आदतों को विकसित करना चाहिए।

समय और अनन्त काल के लिये हम व्यक्तिगत वही होंगे, जो हमारी आदतें हमें बनाती हैं। उनके जीवन जो सही आदतों को विकसित करते हैं और प्रत्येक कर्त्तव्य के संपादन में विश्वस्त हैं, चमकते हुए प्रकाश की तरह होंगे, जो दूसरों के पथ पर उज्वल किरणों को बिखेरेंगे।” – Ellen G. White, Testimonies for the Church, Vol. 4, p. 452.

पथ जिसे एक आदत निर्मित करती है, शीघ्रतम रास्ता है जिसे आप उस ईनाम को पाने के लिये ले सकते हैं, जिसकी आप खोज में हैं। एक आदत एक अंतर्निहित निर्णय है। दूसरे शब्दों में, आप को इस विषय में सोचने की भी आवश्यकता नहीं है; बस, आप इसे करें। वह आदत बहुत अच्छी या बहुत बुरी हो सकती है, इस पर निर्भर करते हुए कि यह क्या है जो आप करते हैं। इस सप्ताह हम सशक्त आदतों पर निगाह डालेंगे जो एक भण्डारी को परमेश्वर के काम को संचालित करने में मदद करेंगी।

रविवार

मार्च 18

**आदत : पहले परमेश्वर की खोज करो**

हम सभी की आदतें हैं। प्रश्न है : वे किस प्रकार की हैं? अच्छी या

- सब्त, मार्च 24 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

बुरी? सभी अच्छी आदतें जो एक मसीही में होने चाहिए, प्रति दिन पहली चीज परमेश्वर को ढूँढ़ना, सभी चीजों में यह अति महत्वपूर्ण होना चाहिए।

“प्रत्येक सुबह स्वयं, मन, शरीर, और आत्मा को परमेश्वर को समर्पित करें। निष्ठा और भरोसे की आदतों को अधिक से अधिक उद्धारकर्ता पर स्थापित करें।” – Ellen G. White, *Mind, Character, and Personality*, Vol. 1, p.15. उस आदत के साथ, हम निश्चित रूप से “संकीर्ण रास्ते” में से होकर प्रवेश कर सकेंगे जो जीवन की ओर अगुवाई करता है (मत्ती 7: 14)।

परमेश्वर ने कहा, “तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना” (निर्गं 20: 3)। हमारी मूल जरूरतों के संदर्भ में यीशु ने कहा “पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो” (मत्ती 6: 33), और हमें भी कहा गया है: “तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे” (यिर्मं 29: 13)।

पढ़ें मत्ती 22: 37-38; प्रेरित 17: 28; इफिं 5: 15-17; एवं कुलुं 3: 23, यहाँ क्या कहा गया है जो हमें समझने में मदद कर सकता है कि परमेश्वर को हमारे जीवन में कैसे प्रथम स्थान दें?

---

परमेश्वर को पहले ढूँढ़ने में हमारे सभी उदाहरण में से संभवता यीशु के उदाहरण की अपेक्षा एक भी बेहतर नहीं है। यीशु ने अपने पिता को प्रत्येक चीज में प्रथम रखा। इस प्राथमिकता को हम, एक बच्चे के तौर पर उसके यरूशलेम के फसह भ्रमण के दौरान देखना शुरू करते हैं। उसकी माँ से जब सामना हुआ जिसने उसे “मंदिर में” पाया, उसने उसे कहा, “मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है” (लूका 2: 46, 49)।

अपने सम्पूर्ण जीवन में यीशु अपने पिता के साथ सहभागिता के लिये तरसा जैसे उसके व्यावहारिक प्रार्थना जीवन द्वारा साबित हुआ। यह आदत कुछ वैसी थी जिसे चेले पूर्णरूपेण समझ न पाये। अंधकार की सभी शक्तियाँ यीशु को पिता से अलग न कर सकीं, क्योंकि यीशु ने पूर्ण रूप से उसके साथ जुड़े रहने को आदत बना ली थी।

परमेश्वर को सम्पूर्ण हृदय, मन और आत्मा से प्रेम करने के निर्णय के द्वारा हम यीशु के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं (मत्ती 22: 37)। प्रार्थना के द्वारा, परमेश्वर के वचन के अध्ययन के द्वारा और सब में जो हम करते हैं

यीशु के चरित्र को आगे बढ़ाने की चेष्टा के द्वारा, हम अपने जीवन में परमेश्वर को प्रथम स्थान देने की आदत को विकसित करेंगे। और एक मसीही के लिये कौन-सी बेहतर आदत हो सकती है?

स्वयं से पूछें : क्या मैंने वाकई परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान दिया है? आप कैसे जानते हैं?

**सोमवार**

**मार्च 19**

**आदत : यीशु के पुनः आने की बाट जोहना**

पढ़ें लूका 12: 35-48. यह दृष्टान्त हमें क्या सिखाता है इस विषय में कि यीशु के दूसरे आगमन से हमें कैसे संबंध होना है? वह सब जो हम करते हैं क्यों हमेशा दूसरे आगमन की वास्तविकता के संदर्भ में होने चाहिए?

---

भण्डारीपन यीशु के वापस आने के प्रकाश में आदतन अभ्यास किया जाना चाहिए। अविश्वस्त भण्डारियों के चरित्र जो विश्वस्त-सा काम करते हैं अंत में वे अपने कामों के द्वारा जाने जायेंगे; क्योंकि सच्चे, विश्वस्त भण्डारी मानों मालिक की उपस्थिति में चौकसी और काम के द्वारा अपनी जिम्मेदारियों को पूरी करते हैं। वे भविष्य के लिये जीते हैं और विश्वस्तपूर्वक दिन प्रति दिन कार्य करते हैं। “पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं” (फिलि० 3: 20)।

अब्राहम एक अनन्त शहर की देख आशा करता था (इब्रा० 11: 10), और पौलुस मसीह के वापस आने की देख आशा करता था (इब्रा० 10: 25)। वे प्रगतिशील चिंतक, क्षणिक जानकारी पर यीशु से मिलने के लिये उमंग से भर जाते, योजना बनाते, और तैयार हो जाते थे। सुसमाचार की पराकाष्ठा के लिये एक स्थायी निगाह के साथ एक दूरी में देखने की इस आदत को भी विकसित करने की आवश्यकता है (तीतुस 2: 13)। कभी-कभी झँकने अथवा यूँ ही भविष्यवाणी में नजर फेरने की बजाय, हमें निरंतर देखने, सजग रहने, और करने, हमेशा अनन्तकाल के प्रति सचेत रहने की जरूरत है जो हमारा इन्तजार कर रहा है जब मसीह वापस आता है। साथ ही साथ हमें अंतिम समय की घटनाओं के विषय में असभ्य और काल्पनिक अटकबाजी से बचना चाहिए। दूसरे आगमन की प्रतिज्ञा हमारे जीवन में हमें निर्देश देती है, वर्तमान के लिये उचित दृष्टिकोण उपलब्ध कराती है, और हमारे जीवन में जो

महत्त्वपूर्ण हैं हमें याद करने में मदद करती है। यीशु के वापस आने की बात जोहने की आदत (अभ्यास) एक भण्डारी को रूपरेखा की स्पष्टता और उद्देश्य देती है। क्रूस ने हमारे लिये उद्धारकर्ता से मिलने का मार्ग प्रशस्त किया है। हम पवित्र शास्त्र में दर्शाए गये पथप्रदर्शक चिह्नों को देखते हैं जो पिता और स्वर्ग दूतों की महिमा में मसीह के आने का संकेत हमें देते हैं (मार्क 8: 38)। “और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं” (2कुरि० 4: 18)।

जी हाँ, मृत्यु, और सदैव-मौजूद मृत्यु की वास्तविकता हमें हमेशा एहसास करने में मदद करती है कि यहाँ पर हमारा समय कितना सीमित और क्षणभंगुर है। परन्तु दूसरे आगमन की प्रतिज्ञा भी हमें दिखाती है कि मृत्यु स्वयं अस्थायी और क्षणभंगुर है। तब आश्चर्य की बात नहीं कि हमें मसीह के वापस आने की प्रतिज्ञा के प्रकाश में जीना चाहिए, एक प्रतिज्ञा जिसे प्रभाव डालना चाहिए कि प्रत्येक मसीही भण्डारी को कैसा जीना चाहिए। चलिये इसे हम अभी आदत बनाते हैं कि हमेशा मसीह के वापस आने की आशा में जीवित रहें। हमारा नाम उस आशा की वास्तविकता को दर्शाता है।

**मंगलवार**

**मार्च 20**

**आदत : समय का बुद्धिमानी से उपयोग करें**

“क्योंकि हम तो कल ही के हैं, और कुछ नहीं जानते; और पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के समान बीतते जाते हैं” (अय्यूब 8: 9)।

आप घड़ी को रोक सकते हैं, पर समय की चाल को नहीं। समय इंतजार नहीं करता है; यह आगे की ओर बढ़ता रहता है जौभी कि हम स्थिर खड़े होते और कुछ नहीं करते हैं।

इस जीवन में यहाँ इस पृथ्वी पर हमारे समय के विषय निम्नलिखित पदस्थल हमें क्या सिखलाते हैं? याकूब 4: 14; भजन 90: 10-12; भजन० 39: 4-5; सभोप० 3: 6-8. मूल विषय क्या है जो हमें इन पदस्थलों से लेना चाहिए कि यहाँ पर हमारा समय कितना मूल्यवान है?

---



---

समय की तरह किसी वस्तु से इतना सीमित और गैर नवीनीकरण है यह महत्त्वपूर्ण है कि मसीहियों को इसके प्रति अच्छा भण्डारी होना है। इस प्रकार

हमें समय को, इस जीवन और आने वाले जीवन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बुद्धिमतापूर्वक व्यवहार करने की आदत विकसित करनी चाहिए। हमें समय को उस आधार पर व्यवस्थित करने की जरूरत है जैसा परमेश्वर का वचन महत्त्वपूर्ण रूप से हम पर उजागर होता है, क्योंकि एक बार समय चला जाता है तो उसका नवीनीकरण नहीं हो सकता है। यदि हम पैसे को खो देते हैं तो अंततः इसे पुनः पा लेते हैं, हो सकता है पहले हमने जितना खोया उससे अधिक पा लेते हैं। समय के साथ ऐसा नहीं है। एक क्षण खो जाता है तो हमेशा के लिये खो जाता है। बीते हुए क्षण को पकड़ लेने की अपेक्षा टूटे अण्डे को पुनः इसके ढाँचे में रखना अधिक सहज है। इस प्रकार समय सबसे मूल्यवान वस्तु है जो हमें परमेश्वर की ओर से दिया गया है। तब कितना महत्त्वपूर्ण है कि हम प्रत्येक क्षण को आदत में विकसित करें जो हमें दिया गया है।

“हमारा समय परमेश्वर का है। प्रत्येक क्षण उसका है, और हम उसकी महिमा के निमित्त इसे सुधार करने के लिये बहुत ही पवित्र कर्तव्य की निगरानी में हैं। हमारे समय की अपेक्षा कोई भी तोड़ा नहीं है जिसे उसने दिया है जिसका वह सख्त हिसाब मांगेगा।

“समय का मूल्य संगणना (हिसाब-किताब) से परे है। मसीह ने प्रत्येक क्षण को बहुमूल्य समझा और इसी रीति से हमें इसे समझना चाहिए। जीवन बर्बाद किये जाने के लिये बहुत छोटा है। हमारे लिये परख अवाधि थोड़े दिनों के लिये है जिसमें हमें अनन्तकाल के लिये तैयारी करनी है। हमारे पास बर्बाद करने के लिये समय नहीं है, स्वार्थ सुख में समय बर्बाद करने के लिये नहीं है, पाप की विलासिता के लिये समय नहीं है।” – Ellen G. White, Christ's Object lessons, p. 342.

“इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाई नहीं पर बुद्धिमानों की नाई चलो। और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं” (इफि० 5: 15-16)। पौलुस यहाँ पर हमें क्या कह रहा है, और हम किस प्रकार इन शब्दों को हमारे वर्तमान परिस्थिति में लागू कर सकते हैं?

**बुधवार**

**मार्च 21**

**आदत : मन, शरीर, और आत्मा को स्वस्थ रखें**

हम मूल रूप से मानसिक, शारीरिक, और आत्मिक तौर पर पूर्ण सृजे गए थे। निस्संदेह पाप ने इस सभी को बर्बाद कर दिया है। दूसरे चीजों में सुसमाचार का सुसंवाद है जो परमेश्वर हमें इकट्ठा करने की प्रक्रिया में है कि हम मूलरूप से किस निमित्त थे।

पढ़ें प्रेरित० 3: 21 एवं प्रका० 21: 1-5, हमारे लिये इन पदस्थलों में कौन-सी आशा पायी जाती है? जैसे हम अंतिम पुनः स्थापन का इंतजार करते हैं, हमें किस प्रकार जीना चाहिए?

---

मसीह ने मानवता को आत्मिक, मानसिक और शारीरिक रूप से उठाने के लिये जब यहाँ पर अथक रूप से कार्य किया, सब कुछ पूर्ववर्ती के तौर पर अंतिम पुनःस्थापन के लिये समय के अन्त में किया। यीशु की चंगाई की सेवा साबित करती है कि परमेश्वर हमसे चाहता है हम अभी जितना संभव हो, जबतक अंत नहीं आता है स्वस्थ रहें। इस प्रकार भण्डारी अपने मनों, शरीरों, और आत्माओं के लिये आदतों को विकसित करते हैं जो एक स्वस्थपूर्ण जीवन शैली को बढ़ावा देती हैं।

पहला, दिमाग मजबूत होगा जब यह अधिक इस्तेमाल होता है। आदतन अपने दिमाग को इनसे परिपूर्ण करें “जो-जो बातें सत्य हैं, और जो-जो बातें आदरनीय हैं, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं, और जो-जो बातें मनभावनी हैं” (फिलि 4: 8)। ऐसे विचार शांति लाते हैं (यशा० 26: 3), और एक “शान्त मन तन का जीवन है” (नीति० 14: 30)। मन की स्वस्थ आदतें सामर्थ्य के गढ़ को संभावित बेहतरीन दशा में कार्यवाही के लिये अनुमति प्रदान करती है।

दूसरा, अच्छी स्वस्थ आदतें, जिस प्रकार व्यायाम और उचित आहार संकेत देते हैं कि हम स्वयं के लिये परवाह करते हैं। उदाहरण स्वरूप व्यायाम तनाव और उच्च रक्तचाप को कम करता है, हमारी मनोदशा में सुधार करता है, और एक मधु के समान है जो अलमारी में मौजूद किसी चीज की अपेक्षा संभवतः अधिक उम्र दराज होने की स्थिति को नियंत्रित करता है।

तीसरा, एक भण्डारी आत्मा को स्फूर्ति से भरने के लिये अच्छी आदतों को विकसित करेगा। अपने अन्तःकरण को परमेश्वर की ओर उठाएँ (भ०सं० 86: 4-5) और इन्तजार करें (भ०सं० 62: 5)। आपका अंतःकरण समृद्ध होगा “जैसे तू सत्य में चलता है” (3यूहन्ना 3) और “प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें” (1थिस्स० 5: 23)।

आपकी आदतों की प्रकार के विषय सोचें और वे आपके आत्मिक, शारीरिक, और मानसिक स्वस्थ को कैसे प्रभावित करती हैं। क्या कुछ बदलाव है जिसे आपको करने की जरूरत है जो आपको किसी एक या सभी क्षेत्रों में सुधार हेतु मदद कर सके? कौन-से चुनाव आप कर सकते हैं और कौन-सी

बाईबल प्रतिज्ञाओं को आप दावा कर सकते हैं जो आपको अभी अपने जीवन के गुण में सुधार की मदद करेगा जैसे कि आप आपके अंतिम पुनः स्थापन का इन्तजार करते हैं?

## बृहस्पतिवार

मार्च 22

### आदत : आत्म-अनुशासन

आत्म-अनुशासन बहुत ही महत्वपूर्ण चारित्रिक गुणों में से एक है, जिसे एक भण्डारी के पास होना आवश्यक है। “क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है” (2तीमु० 1:6)। अनुशासन के लिये ग्रीक शब्द ‘सोफ्रोनिस्योस’ नये नियम में केवल यहाँ पर इस पद में प्रकट होता है और करने की योग्यता को सम्मिलित करता है जो संतुलित, स्वस्थ मन के साथ किया जाना चाहिए जो परमेश्वर के सिद्धान्तों से विचलित नहीं होगा। आत्म-अनुशासन हमें अच्छाई को बुराई से फर्क करने में मदद कर सकता है (इब्रा० 5:14), परिस्थितियों को पास से समझें और फिर भी शांत और नम्रता से दबावों और व्याकुलताओं को नतीजे की परवाह किये बिना सामना करें। समसोन के विपरीत जिसने आत्म-अनुकूल जीवन जीया और बिलकुल कम अंकुश या उचित निर्णय लिया, वह दानिएल, जो सिंहों के मध्य होने के बावजूद सच्चाई में अडिग रहा, पोतिफर के घर में यूसुफ सच्चाई में अडिग रहा अथवा सुलैमान के विपरीत जिसने अन्य देवताओं की उपासना की (1राजा 11:4-5)।

पढ़ें 1कुरि० 9:24-27. आत्म-अनुशासन के विषय पौलुस यहाँ पर क्या कहता है? वह क्या कहता है जो अंततः आत्म-अनुशासन के सम्पूर्ण प्रश्न पर एक खतरा है?

---

---

“संसार आत्म संतोष के अनुसार दिया गया है। भूल और किस्से बहुतायत हैं। लोगों को नाश करने के लिये शैतान के फंदे बढ़ती पर हैं। सब, जो परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करेंगे, आत्म-अनुशासन और संयम के पाठों को सीखेंगे। इच्छाएँ और जुनून मन की उच्चतर शक्तियों के तहत संघटित होनी चाहिए। यह आत्म-अनुशासन मानसिक ताकत और आत्मिक अंतर्दृष्टि के लिये आवश्यक है जो हमें परमेश्वर के वचन की पवित्र सच्चाईयों को समझने और अभ्यास करने हेतु सक्षम बनायेगा।”- Ellen G. White, the Desire of Ages, p. 101.

आदतन अभ्यास के द्वारा आत्म-अनुशासन में सुधार होता है। परमेश्वर ने आप को हर चीज में जो आप करते हैं पवित्र होने को बुलाया है (1पत० 1:15) और “भक्ति की साधना कर” (1तीमु० 4:7)। भण्डारियों को आत्म-अनुशासित होने के लिये अभ्यास और प्रशिक्षण लेना चाहिए वैसे ही जैसा बहुत योग्य ऐथलीट (खेल-कूद में प्रशिक्षित व्यक्ति) या संगीत कर लेते हैं। हम परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा और हमारे स्वयं के अथक प्रयास से उन चीजों में जो सचमुच महत्वपूर्ण हैं हमें स्वयं को अनुशासित करना चाहिए।

हम परमेश्वर के सामर्थ्य में समर्पित होना कैसे सीख सकते हैं, वही मात्र हमें आत्म-अनुशासन दे सकता है, हमें पतित एवं भ्रष्ट संसार में ईश्वर भक्त और विश्वस्त भण्डारियों की तरह जीवन जीने की आवश्यकता है?

### शुक्रवार

मार्च 23

**अतिरिक्त अध्ययन :** हनोक और नूह ने उस युग में जब कम ही लोग अति, भौतिकवाद, और हिंसा के मध्य में विश्वस्त रहे, परमेश्वर के साथ चलने को आदत बना लिया (उत्प० 5:24, 6:9)। उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह को समझा और ग्रहण किया और उन्हें सौंपे गये कामों और सम्पत्तियों के अच्छे भण्डारी हुए। पिछले काफी युगों में लोग हनोक और नूह की तरह परमेश्वर के साथ चले हैं। उदाहरण के लिये, दानिय्येल और उसके दोस्तों ने “महसूस किया कि मूर्तिपूजा के झूठे धर्मों के बीच में सच्चे धर्म के प्रतिनिधियों के तौर पर खड़े होने के लिये उन्हें बुद्धि की स्पष्टता होनी चाहिए और एक मसीही चरित्र को सिद्ध करना चाहिए। और परमेश्वर स्वयं उनका शिक्षक था। लगातार प्रार्थना कर, ईमानदारी से अध्ययन कर, अनदेखे के साथ संबंध बनाये रख कर, वे हनोक की तरह परमेश्वर के साथ चले।” – Ellen G. White, prophets and kings. p. 486.

“परमेश्वर के साथ चलना” उसे वर्णन करता है जो एक भण्डारी करता है, वह है इस पृथ्वी पर दिन-प्रति-दिन परमेश्वर के साथ रहना। एक बुद्धिमान भण्डारी भ्रष्ट संसार के मध्य में परमेश्वर के साथ चलने को एक आदत बनायेगा। क्योंकि परमेश्वर के साथ इस संबंध के द्वारा ही हम प्रचलित बुराईयों में गिरने से बचाये जा सकते हैं।

एक विश्वस्त भण्डारी होना जीवन को एक सर्वव्यापक आवश्यकता बना देता है जो परमेश्वर के साथ समझौता हो जाने से शुरू होता है (आमोस 3:3)। हमें मसीह में चलना चाहिए (कुलु० 2:6), जीवन की नवीनता में



चलना चाहिए (रोम० 6:4), प्रेम में चलना चाहिए (इफि० 5:2), ज्ञान में चलना चाहिए (कुलु० 4:5), सच्चाई में चलना चाहिए (भ०सं० 86:11), ज्योति में चलना चाहिए (1यूहन्ना 1:7), ईमानदारी में चलना चाहिए (नी०व० 19:1), उसकी व्यवस्था में चलना चाहिए (निर्ग० 16:4), अच्छे कामों में चलना चाहिए (इफि० 2:10), और सीधे रास्ते पर चलना चाहिए (नी०व० 4:26)।

#### विचार-विमर्श के लिए प्रश्न :

1. नम्रता का वर्णन करें और एक भण्डारी के जीवन में इसकी भूमिका को स्पष्ट करें (मत्ती 11:29, इफि० 4:2, फिलि० 2:3, याकूब 4:10), परमेश्वर के साथ हमारे चलने में नम्रता क्यों महत्वपूर्ण है? (मीका 6:8)।
2. कक्षा में उन तरीकों के विषय बातें करें जिससे हम उन्हें मदद कर सकते हैं जो हमारे बीच में बुरे, यहाँ तक कि आत्मघाती आदतों में फंसे हुए हैं आप एक स्थानीय चर्च होने के नाते इन लोगों की मदद के लिये क्या कर सकते हैं?
3. अन्य कौन-सी अच्छी आदतें मसीही भण्डारियों के पास होनी चाहिए? उदाहरण के लिये देखें, तीतुस 2:7, भजन० 119:172, मत्ती 5:8.
4. कक्षा में समय और समय की रहस्यों के विषय बातें करें। यह क्यों इतनी रफ्तार से जा रहा महसूस होता है? हम कैसे समझ सकते हैं कि समय क्या है? और इससे अधिक महत्वपूर्ण यह क्यों आवश्यक है कि जब हम इस पृथ्वी पर हैं हमारे पास जो है इसके अपेक्षाकृत कम मात्रा में हम अच्छे भण्डारी हों?